(1) 31/10/20

B.A. + B.Sc.
Part I
Hindi रचना — तुलसीदास

डॉ० अनुपमा कुमारी
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
[illegible] कॉ०
जहानाबाद

प्रश्न — प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें —

सुत बनितादि जानि स्वारथरत
न करु नेह सबही ते।
अंतहु तोहि तजेंगे पामर,
तू न तजै अबही ते॥
अब नाथहिं अनुरागु जागु जड़।
त्यागु दुरासा जी ते।
बुझै न काम अगिनि तुलसी कहुँ
विषय भोग बहु घी ते॥

उत्तर:— प्रस्तुत पंक्तियाँ महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित है। प्रस्तुत पंक्तियों में भगवान की भक्ति भावना पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि संसार की सच्चाई पर प्रकाश डालते हुए कवि कहता है कि पुत्र-पुत्री आदि, परिवार आपके सम्बन्धी वास्तुतः स्वार्थी बस है। अन्त में वे आपको अपना प्रेम नहीं करते हैं। इसलिए आप उनसे झूठी प्रेम को त्याग दीजिये।

भावार्थ:—

क्रमशः:

② 3/10/20 डॉ० [illegible]
B.A. + B.Sc. I Year कु.सो.
Hindi प्रथम

अतः है आपको त्यागना पड़ेगा। जब तक आप उनके लिये उपयोगी हैं तब तक वे आपके साथ हैं। इस कारण से आपको भी सावधान होना तथा आपको भी उन्हें अपने को छोड़ देना होगा।

जीवन की सच्चाई समझते हुए तुलसीदास कहते हैं कि इस संसार सांसारिक आसक्ति को छोड़ कर ईश्वर की भक्ति भगवान से प्रेम करना चाहिये। आपको नाता त्यागनी होगी और सच्चाई को समझते हुए भगवान की भक्ति में मन लगाना होगा।

यह संसार विषय-वासना का घर है। काम की अग्नि कभी समाप्त नहीं होती है। नाना प्रकार का विषय भोग मनुष्य को अपनी ओर आकृष्ट करता है। मनुष्य का कार्य है विषय-वासना से दूर रहकर भगवान का भजन करना। नहीं तो बुढ़ापे में काफी पछताना पड़ेगा। भगवान की भक्ति ही मूल है।

विशेष — प्रस्तुत पंक्तियों में भगवान की भक्ति को श्रेष्ठ बताया गया है। बेटा-बेटी परिवार आदि के बन्धनों से मुक्त बताया गया है। नीचे की पंक्तियों में काम वासना और विषय भोगों को त्यागने की बात स्पष्ट रूप से की गई है।

NOV 2014
S M T W T F S
30 1
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29